ज्योत्सना सक्सेना

बंदर की समझदारी

टहनी झूला बंदर झूले
मीठे मीठे जामुन छू ले
मगरमच्छ से दूर रहना
पानी में ना भैया कूदना

हंसता गाता धुन में रहता
मीठे जामुन फेंका करता
मगरमच्छ से गपियाता था
जामुन का भोग लगाता था

टहनी झूला बंदर झूले
मीठे मीठे जामुन छू ले

पत्नी के कहने में आया
चालाकी से दोस्त फंसाया
मगरमच्छ था बड़ा होशियार
पर दोस्त डूबा गहन विचार

टहनी झूला बंदर झूले
मीठे मीठे जामुन छू ले

पहले गर मुझसे तुम कहते
झोली में दिल हम रख लेते
डाली में लटका दिल आए
चलो चलो वापिस ले आएं

कूदे चढ़े पेड़ में भैया
ठेंगा ले लो दुश्मन भैया
दिल क्यों टांगा बंदर भैया
चतुर निकले तुम बंदर भैया

टहनी झूला बंदर झूले
मीठे मीठे जामुन छू ले

दोस्ती तो मैं खूब निभाता
कपटी के काबू ना आता
मन से सीधा सादा सच्चा
चिढ़ जाऊं तो खा लूं कच्चा

टहनी झूला बंदर झूलो
मीठे मीठे जामुन छू लो